लास्ट सो फास्ट कैसे जायें?

जिस रास्ते जाना नहीं उसकी राह पूछने से क्या लाभ...!!!

राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि योग की ओर मन खींचने लगे तो समझो हमने बहुत कुछ पा लिया है। फिर तो हम बाबा केपास जाकर बैठेंगे और बाबा से उसके सम्पूर्ण वायब्रेशन्स हमको मिलते रहेंगे। वायब्रेशन्स के रूप में उसके सर्व खज़ाने आत्मा में समाते हैं। चाहे सुख हो, शान्ति हो, पवित्रता हो, खुशी हो, उसका प्रेम हो, शक्तियां हो, उसकी दुआएं हो सब वायब्रेशन्स के रूप में ही आत्मा में समाती रहती हैं। बहुत अच्छा होगा यदि आप ये अभ्यास कर लें। अब आगे पढ़ेंगे...

पुराने भी हैं जो ढीले हो गए हैं। उनको भी ये अभ्यास कर लेना चाहिए। और पुराने में भी और तेज चलना चाहते हैं, समय की नाजुकता को जो समझते हैं उन्हें भी 4 बार 10-10 मिनट अवश्य बैठना चाहिए। कई भाई-बहनें ये कर रहे हैं, हमारे समर्पित भाई-बहनें भी करते हैं। जब भी टाइम मिलता है कहीं भी, बाबा के बहुत सारे रूम, मेडिटेशन रूम बने हुए हैं, कहीं भी बैठकर अच्छा योग करते हैं। योग करने में हमें 10 मिनट के लिए ये लक्ष्य ले लेना चाहिए। जैसे इस बार हम 10 मिनट पांच स्वरूपों का अभ्यास करेंगे, इस बार हम दस मिनट आत्मा के स्वरूप पर स्थित होंगे, आत्मा का चिन्तन करेंगे। इस बार 10 मिनट में हम परमधाम में बाबा के साथ जाकर बैठेंगे, फिर सूक्ष्म वतन में बापदादा के सामने जाकर दृष्टि लेंगे, बातें करेंगे। ऐसे एक लक्ष्य लेकर योग करने से हम उस ड्रिल में व्यस्त होंगे और बुद्धि भटकेगी नहीं।

ये सभी के लिए बहुत-बहुत आवश्यक है। आगे जाना है, आप अभी-अभी आये हैं। अच्छी तरह जानते हैं प्रभु मिलन के लिए पवित्रता पहली शर्त है। जो पवित्र नहीं वो भगवान को प्रिय भी नहीं और वो योगी भी

> *प्रतिज्ञा करें भगवान से कि किसी भी कीमत पर इस पथ से हम विचलित नहीं होंगे। माया तो चारों ओर है। गन्दी चीज़ें दिखाई भी बहुत देती हैं, इलेक्ट्रॉनिक्स के साधन भी पतन का बहुत बड़ा कारण बनते जा रहे हैं। लेकिन हिन्दी में एक कहावत है- जिस पेड़ के आम नहीं खाने उसके पत्ते गिनने से क्या लाभ!*

नहीं बन सकते हैं। क्योंकि इसके पीछे राज़ ये है कि योग में बुद्धि को स्थिर करने के लिए परमात्म स्वरूप पर, बुद्धि का बहुत डिवाइन और शक्शिाली होना आवश्यक है। और यदि कोई विषय विकारों में है तो उसकी शक्तियां नष्ट होती रहती हैं और उसकी बुद्धि स्ट्रॉन्ग नहीं हो पाती।

ब्रह्मचर्य का जो आधार इसको बनाया गया है उसका कारण यही है कि पवित्रता की शक्ति ब्रेन को डिविनाइज करे, दिव्य करे, शक्तिशाली करे ताकि वो स्थिर हो सके। कमज़ोर बुद्धि स्थिर नहीं हो सकती। तो पहली धारणा पवित्रता। प्रतिज्ञा करें भगवान से कि किसी भी कीमत पर इस पथ से हम विचलित नहीं होंगे। माया तो चारों ओर है। गन्दी चीज़ें दिखाई भी बहुत देती हैं, इलेक्ट्रॉनिक्स के साधन भी पतन का बहुत बड़ा कारण बनते जा रहे हैं। लेकिन हिन्दी में एक कहावत है- जिस पेड़ के आम नहीं खाने उसके पत्ते गिनने से क्या लाभ! तो जिस मार्ग पर हमें चलना नहीं है उसकी चीज़ें क्यों हम देखें! हम इम्प्युर फिल्में, गन्दी चीज़ें जो आती हैं व्हाट्सएप्प पर, फेसबुक पर, यूट्यूब पर उन्हें हम क्यों देखें?

लक्ष्य बना लें, अपने को टीच करें(अपने को पढ़ायें) ये हमारा मार्ग नहीं है। ठीक है दुनिया में गन्दगी ही गन्दगी है, इसी को जीवन मान लिया है सबने। लेकिन हमारा ये मार्ग नहीं है। ऐसी स्वयं से बातें करते हुए प्युरिटी को स्ट्रॉन्ग करें। हमें उधर देखना ही नहीं है, उसके लिए सोचना ही नहीं है, जिस मार्ग पर हमें जाना नहीं है, भगवान को वचन दे दो- हम सम्पूर्ण पवित्र बनकर तुम्हारे महान कार्य को सफल करेंगे। और भगवान को एक बार वचन दे दिया तो उसे वापिस नहीं लेंगे।

कुछ भी करना पड़े, साथियों को समझा दो कि भगवान को वचन दे दिया हमने, हम सब कुछ छोड़ने को तैयार हैं पर पवित्रता का पथ नहीं छोड़ेंगे। ये ईश्वरीय पथ है, ये प्रभु मिलन का मार्ग है। भगवान को खोजने का मार्ग नहीं, इसमें निरन्तर प्रभु मिलन का सुख हम प्राप्त कर सकते हैं, अतिन्द्रिय सुखों में रमण कर सकते हैं। ऐसा यदि आप करेंगे तो आप बहुत आगे चले जायेंगे।

रामपुर-उ.प्र.। होली मिलन मेला में कृषि मंत्री बलेदव सिंह औलख को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. संगीता। साथ हैं ब्र.कु. प्रभा तथा अन्य।

पुखरायां-उ.प्र.। नवनियुक्त भाजपा महिला जिलाध्यक्ष रेणुका सचान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ममता बहन, राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला, राज्यमंत्री अजीत पाल, विधान परिषद सदस्य अविनाश सिंह चौहान तथा अन्य।

गाज़ियाबाद-उ.प्र.। प्रभु साधना भवन के निर्माण हेतु भूमि पूजन समारोह के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी,ब्रह्माकुमारीज़ वुमेन विंग चेअरपर्सन, ब्र.कु. रानी दीदी, ब्र.कु. लाज दीदी, ब्र.कु. जयंती दीदी, डॉ. ऊषा किरण, डॉ. एमडी गुप्ता, विनोद त्यागी,अध्यक्ष रेड कार्पेट ग्रुप, ऋषभ निर्मान,निदेशक जेडी पब्लिक स्कूल, प्रधानाचार्या अर्चना त्यागी, मनोज त्यागी, ब्रज भूषण शर्मा,आरडब्ल्यूए अध्यक्ष एडवोकेट, भाजपा नेता राजेन्द्र त्यागी तथा अन्य।

आनन्दपुरी कॉलोनी-हाथरस(उ.प्र.)। विश्व जल दिवस पर जल संरक्षण जागरूकता प्रदर्शनी के द्वारा सभी को जल का महत्व बताने के पश्चात् समूह चित्र में प्रतिज्ञा करते हुए ब्र.कु. शान्ता दीदी, ब्र.कु. वन्दना तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

शीला बाईपास-रोहतक(हरियाणा)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं श्रीमती सरिता खनगवाल,ब्लॉक एजुकेशन अधिकारी, नीना सुहाग मंडल,भूमि संरक्षण अधिकारी, श्रीमती अनीता मलिक, ब्र.कु. रक्षा बहन तथा अन्य।

गया-सिविल लाइंस(बिहार)। शिवरात्रि के अवसर पर निकाली झांकी का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. शीला दीदी, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर के उपायुक्त शिशिर सौरभ, प्रतिष्ठित व्यापारी प्रदीप जैन तथा आयकर निरीक्षक सुधीर।

ऊपर से नीचे

1. अब अपने शुभ भावना की वृत्ति, शुभ कामनाओं की वृत्ति से ..... में वायब्रेशन फैलाओ।(5)
2. लक्ष्य सबका बहुत ऊंचे ते ऊंचा है लेकिन प्रत्यक्ष रूप में लक्षण ..... हैं।(5)
3. पाण्डव "लेकिन" शब्द अच्छा लगता है? नहीं अच्छा लगता। इसके लिए सबसे ..... विधि है, पहले हर एक अपने अन्दर चेक करो - मेरी वृत्ति में किसी आत्मा के प्रति भी कोई निगेटिव वायब्रशेन है?(3)
4. सभी ने अनुभव कर लिया है, वाणी से परिवर्तन, शिक्षा से परिवर्तन बहुत धीमी ..... से होता है, अगर आप फास्ट ..... चाहते हो तो नॉलेजफु ल बन, क्षमा स्वरूप बन, रहमदिल बन, शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करो।(2)
8. अगर विश्व का वायुमण्डल परिवर्तन करना है, लेकिन अपने मन में किसी एक आत्मा के प्रति भी अगर व्यर्थ वायब्रेशन वा सच्चा वायब्रेशन भी निगेटिव है तो वह विश्व परिवर्तन कर नहीं सकेगा। बाधा पड़ता रहेगा, ... लग जायेगा।(3)
11. अभी-अभी अपनी वृत्ति को एकाग्र कर सकते हो? कहाँ भी वृत्ति ..... में नहीं आये। अचल, एकाग्र, शक्तिशाली रहे।(4)
13. कितनी भी सेवा कर लो, रोज़ आठ-आठ ..... कर लो, योग शिविर करा लो, कई प्रकार के कोर्स क रा लो, कई प्रकार के कोर्स करा लो लेकिन किसी के प्रति भी अपनी वृत्ति में कोई पुराना निगेटिव वायब्रेशन नहीं रखो।(3)
14. महिला, स्त्री।(2)
16. अधिक, बहुत, ज्यादा, अत्यधिक। (2)
18. बाप को ..... करने के लिए अपनी व दूसरों की वृत्ति को पॉजिटिव बनाओ। (3)
19. घबराहट, डर। (2)

अव्यक्त मुरली 24-02-2002 (पहेली-16)2024 -25

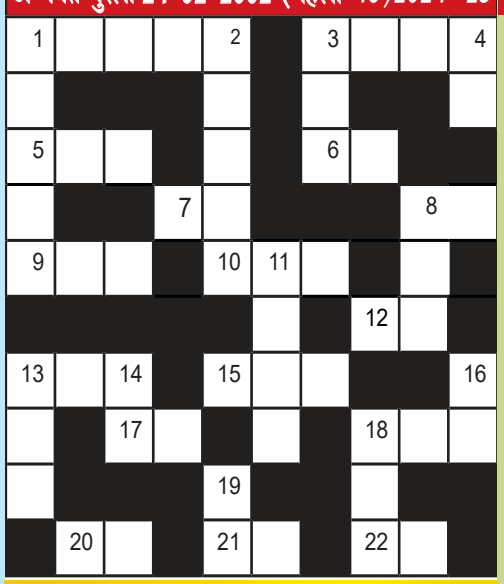

15/24- पहेली का उत्तर

(अव्यक्त मुरली 03-02-2002)

ऊपर से नीचे: 1. विज्ञानी, 2. यर्थाथ, 3. निश्चय, 4. काम, 5. सूर्यवंशी, 7. भविष्य, 8. खुश, 10. वायुमण्डल, 11. नया, 12. जमा, 14. साइडसीन, 16. कमल 17. प्रतिज्ञा।

बायें से दायें: 1. विजय, 3. निराकार, 6. कार्य, 9. अविनाशी, 10. वायब्रेशन, 13. हिंसा, 15. मस्तक, 17. प्रमाण, 18. मन, 19. ज्ञान, 20. लक्ष्य, 21. समान।

बायें से दायें

1. मन्दिर की मूर्तियां प्रत्यक्ष रूप में ..... द्वारा सेवा कर रहे हैं अर्थात् आप आत्मायें मन्दिर की मूर्तियां सेवा कर रही हैं।(5)
3. चाहे पाण्डव, चाहे शक्तियां, एक-एक का सहयोग, सफलता को प्राप्त करा रहा है। आप यह नहीं समझना हम तो सिर्फ देखने वाले हैं, नहीं। करने वाले हैं। सर्व के ..... से बेहद का कार्य चल रहा हैं।(4)
5. ..... की मूर्तियां प्रत्यक्ष रूप में वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रहे हैं अर्थात् आप आत्मायें ..... की मूर्तियां सेवा कर रही हैं।(3)
6. आपके जड़ चित्र अब तक, लास्ट ..... तक वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रहे हैं।(2)
7. जो ..... के स्टेज पर निमित्त बच्चे हैं, वह सदा एक ही संकल्प में रहते कि बाप को प्रत्यक्ष कैसे करें?(2)
9. लक्ष्य और ..... समान होना अर्थात् बाप समान बनना।(3)
10. बीती को बिन्दी लगाना और ..... के सिन्धु बन जाना।(3)
13. चारों ओर का वायुमण्डल अगर सम्पूर्ण निर्विघ्न, रहमदिल, शुभ ....., शुभ कामना वाला बन जायेगा तो प्रत्यक्षता में कोई देरी नहीं।(3)
15. अभी-अभी अपनी वृत्ति को एकाग्र कर सकते हो? कहाँ भी वृत्ति हलचल में नहीं आये। ....., एकाग्र, शक्तिशाली रहे।(3)
17. रस्म, रिवाज़, प्रथा।(2)
18. नॉलेज है- यह रांग है, यह राइट है। नॉलेजफुल बनना रांग नहीं है, लेकिन वृत्ति में धारण करना यह रांग है क्योंकि अपने में ही मूड़ ऑफ, व्यर्थ संकल्प, याद की पावर कम, नुकसान होता है। जब ..... को भी आप पावन बनाने वाले हो तो यह तो आत्मायें हैं।(3)
20. अभी-अभी वृत्ति पॉवरफुल करो, वायब्रेशन पॉवरफुल बनाओ, वायुमण्डल पॉवरफुल बनाओ क्योंकि सभी ने अनुभव कर लिया है, ... से परिवर्तन, शिक्षा से परिवर्तन बहुत धीमी गति से होता है।(2)
21. आपके ..... की स्थापना के बाद ही साइंस ने वृद्धि को प्राप्त किया है तो उसका फायदा कुछ तो लेंगे ना!(2)
22. ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष में देखा, कैसी भी बार-बार गलती करने वाली आत्मा रही लेकिन बापदादा ने सर्व बच्चों प्रति याद-प्यार देते, सर्व बच्चों को मीठे-मीठे कहा। फिर भी ऐसी आत्माओं के प्रति भी सदा रहमदिल बनें। ..... के सागर बनें।(2)